

अजमेर

Rashtradoot

फोन:- 2627612, 2427249 फैक्स:- 0145-2624665

वर्ष: 29 संख्या: 98

प्रभात

अजमेर, गुरुवार 7 नवम्बर, 2024

आर.जे./ए.जे./73/2015-2017

पृष्ठ 6

मूल्य 2.50 रु.

'बुद्धिजीवियों का राजनीतिक सोच व आकलन जनता के आकलन से मेल नहीं खाता'

अमेरिका के राष्ट्रपति के चुनाव के नतीजों ने बेमेल राजनीति की विडम्बना को उजागर किया

-अंजन रंग-

-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 नवम्बर अमेरिका के राष्ट्रपति चुनावों में डॉनल्ड ट्रम्प की समर्थन जीत, अमेरिका की राजनीति में, चरम

गए।

डॉनल्ड ट्रम्प ने, बढ़ते इमिग्रेशन को सेकर औसत अमेरिकी नागरिक के भय का लाभ उठाया। जिसके कारण लोगों में अधिक असुरक्षा की भावना जीत, अमेरिका की राजनीति में, चरम

- अमेरिका के मीडिया ने ही नहीं, पाश्चात्य देशों के मीडिया ने जमकर, बिना हिचक ट्रम्प का विरोध किया था, और कमला हैरिस का समर्थन, पर जनता की भावना इससे अलग थी।
- ट्रम्प ने एक साधारण श्वेत अमेरिकी के मन में विदेशियों के भारी आगमन से जनति भय व असुरक्षा की भावना को खुल भड़काया और अन्त में भारी राजनीतिक लाभ उठाया।
- इसी प्रकार, ट्रम्प ने आम मतदाता के मन में यह भर दिया कि, अमेरिकी इकॉनमी की हालत खस्ता है। यह सच नहीं है, अमेरिकी इकॉनमी 3 प्रतिशत रेट से बढ़ रही है, जो बूप्रतिष्ठित मैगज़ीन द इकॉनमिस्ट के अनुसार ऐतिहासिक उपलब्धी है। खस्ता इकॉनमी की 'खबर' ने भी आम मध्यम वर्ग अमेरिकी के मन में बैचैनी पैदा की, जिसे भी ट्रम्प ने बख्ती, होशियारी से राजनीतिक लाभ उठाने के लिए काम में लिया। आम श्वेत अमेरिकी नागरिकों में व्यापार निराशा की भावना भी ट्रम्प के लिए मददगार साबित हुई।

दक्षिणपंथी नीतियों तथा रुद्धिवाद की पैदा हो गई है, जो भावना जीतनी भी गलत पूर्णता है। उदाहरणीय मूल्य, कट्टर

क्यों न हो।

दक्षिणपंथी के स्पष्ट झूठों से भी हार

विकसित देशों में अमेरिका की



डॉनल्ड ट्रम्प की जीत ने अमेरिका के बुद्धिजीवियों व प्रतकारों को निरुत्तर कर दिया।

अर्थव्यवस्था सबसे अच्छा प्रदर्शन कर रही तथा ऊंची व्याज दरों के बावजूद, जानी-मानी पत्रिका 'इकॉनमिस्ट' ने उसकी गोप्य को "प्रीवटी डिफाइंग दोहराने, तेल तथा कुछ खाद्य पदार्थों के मूल्यों में बढ़ि जैसी कमियों को बार-

अर्थव्यवस्था के रूप में वर्तमान अमेरिका की 3 प्रतिशत ग्रोथ रही है, जो कि अभूतपूर्व है।

तथापि, देश के आर्थिक दुःखों को दोहराने, तेल तथा कुछ खाद्य पदार्थों के व्यापार पर विदेशी व्यापारियों को बार-

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'बिना पूर्व सूचना घर नहीं तोड़ सकती सरकार'

- डॉ. सतीश मिश्रा -

- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 6 नवम्बर सुप्रीम कोर्ट ने, योगी सरकार द्वारा उचित प्रतिक्रिया का पालन किए बिना घरों को तोड़ने के पूरे पर उत्तर प्रदेश को आज आड़े हाथों लिया और कहा कि राजनीति घरों को घरेलाई नहीं किया जा सकता। परिवारों को घर खाली करने के लिए समय दिया जाना चाहिए।

भारत के मुख्य न्यायाधीश,

श. वाय. चंद्रचूड़ की अधिक्षता वाली बैंच, सन् 2020 के खत: पंजाब के एक केस में सुनवाई कर रही थी। इस केस का आधार मनोज टिबरेवाल आकाश नामक एक व्यक्ति का एक पत्र

■ सुप्रीम कोर्ट ने वर्ष 2020 के एक मामले में यू.पी. सरकार को फटकारा और कहा कि ऐसा करना गैर कानूनी है।

था। इस व्यक्ति का मकान 2019 में ध्वन्तर कर दिया गया था। याचिकाएँ का कहना है कि उनका मकान, एक राजमार्ग पर कथित अतिक्रमण को लेकर, बिना कोई पूर्व सूचना दिये, द्वा

दिया गया था।

इस केस की सुनवाई का नम्बर, संवेदनश, ऐसे समय पर आया, जब सर्वोच्च न्यायालय की एक अन्य बैंच

'बुलडोजर जरिस्ट' को चुनौती देने

वाली याचिकाओं को सुनवाई कर रही थी।

जानत्वा के लिए उन्होंने अपने ग्राही

प्रतिक्रिया के लिए उन्होंने अपने प्रिय

विवरण पर जो उन्होंने अपने ग्राही

के लिए उन्होंने अपने ग्राही

विचार बिन्दु

निरंतर विकास जीवन का एक नियम है। और जो भी व्यक्ति खुद को सही दिखाने के लिए अपनी रुद्धिविदिता को बरकरार रखने की कोशिश करता है वो खुद को एक गलत स्थिति में पहुंचा देता है। -महात्मा गांधी

महिलाओं के स्वाभिमान पर जुबानी हमले

दे

श की मीडिया विशेषज्ञ पर इलेक्ट्रॉनिक पर सरोआम महिला नेताओं के शरीर और चरित्र पर जुबानी हमलों की झड़ी लगी रहती है। अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं। यहाँ किसी का नाम लिखने की जरूरत नहीं है। ऐसे कार्यों में पक्ष और विपक्ष दोनों के नेता समान रूप से जिम्मेदार हैं। हमारी कथनी और करनी में कितना अंतर है, यह साफ दृष्टिकोर रहता है। बात-बात पर महिलाओं के साथ दुव्विवहार आरोपित करने वाली महिला नेता ऐसी चटानों पर चुप्पी साध लेती है। वे इस दौरान पार्टी लालन पर चलती हैं और उन्हें इस बात से कोई मतलब नहीं है। आपनी पार्टी के नेताओं की महिला जो के बारे में क्या सोचती है। आश्वर्य तब होता है जब महिला नेता ही दूसरे पक्ष की महिला नेता पर अपनी भावी व्याप्तियां करती है। कहने का तात्पर्य है महिला ही महिला की दृश्यन बन जाती है।

हमारे देश में नारी पूजने का हम गर्व के साथ स्मरण करते हैं। भारतीय संस्कृति, सदैव 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' सिद्धान्त का अनुगमनी है। भारत में सर्वदा नारी को अत्यन्त उच्च स्थान पर प्रतिष्ठित किया गया तथा उसे लक्षणी, देवी, स्त्राजी, महिली अति सम्मानसूचक नामों से अलंकृत किया जाता था। मगर यह भी सच है मैंका मिलते ही हम नारी की अस्मिन्दा को अलंकृत करता है। चुनाव आते ही हमारे देश में तरह-तरह के बोल सुनने और देखने को मिलते हैं। हम बात कर रहे हैं महाराष्ट्र और झारखण्ड चुनावों की।

चुनावों के दौरान नारी की अस्मिन्दा को लेकर एक बार फिर घमासान मचा दुआ है और एक-दूसरे पर आरोपों की झड़ी लगायी जा रही है। महाराष्ट्र के एक बड़े नेताजों ने चुनाव लड़ रही एक महिला नेता को रिजेक्ट दोषित कर दिया। यह तो एक बानी है। ऐसी घटनाएं हमारे देश में आये देखने और देखने को मिलते हैं। हम बात कर रहे हैं ही हम महिलाओं को दुक्कारे दें रह नहीं करते।

एक तरफ सियासी पार्टियां अपने चुनावी घोषणा पत्रों और गारंटीयों में महिला वोटरों को लुभाने के लिए तरह-तरह के प्रलोभन देते हैं वही चुनाव लड़ रही महिलाओं के के जरूर होने की अपील करती है। देश का दुर्भाग्य है महिलाओं पर अपनी भावी व्यापक आज महिलाओं के समक्ष जो स्वतंत्रता चुनावी व्यापक में अंतर्भूत करने की जरूरत है। देशभर में इन दिवसों महिलाओं पर अल्पाचार, छेड़खानी और दुष्कर्म की वारदातों से समाचार पत्रों के पत्रे रोंगे होते हैं। दुनियां चाहे कितनी ही तरकी कर रही है। हम अपने व्यवहार और आदर्शों को तेवर दर्ज करते हैं।

अपने एक छोटे से गांव से देश की राजधानी तक महिला सुरक्षित नहीं है। अंधेरा होते-होते महिला प्रगति और विकास की बातें छू-मंतर हो जाती हैं। रात में विचरण करना बेहद डरावना लगता है। कामकाजी महिलाओं को सुरक्षित घर पहुंचने की चिंता सताने लगती है। ऐसे में जरूरी है कि हम नारी तब तक समानता और विकास की बात अधूरी होंगी।

सदियों से हमारा समाज पूरुष प्रधान समाज रहा है। हमने नारी को दोयम दर्जे का माना है। आज समाज के दोहरे मापदण्ड नारी को एक तरफ पूजनीय बताते हैं तो दूसरी तरफ उनका शोषण करते हैं। यह नारी जाति का अपमान है। महिला समाज से वही समान पाने की अधिकारी है जो समाज पूरुषों को उनकी गलतियों के बाद भी एक अच्छा आदमी बनने का अधिकार प्राप्त करता है। सीता से लेकर क्रीपटी तक के उदाहरण हमारे सामने हैं।

प्रधान समाज रहा है। अपने एक छोटे से गांव से देश की राजधानी तक महिला सुरक्षित नहीं है। अंधेरा होते-होते महिला प्रगति और विकास की बातें छू-मंतर हो जाती हैं। रात में विचरण करना बेहद डरावना लगता है। कामकाजी महिलाओं को सुरक्षित घर पहुंचने की चिंता सताने लगती है। ऐसे में जरूरी है कि हम नारी

महिला समानता और सुरक्षा आज सबसे अहम मुद्दा है, जिसे किसी भी हालत में नकारा नहीं जा सकता। सच तो यह है कि एक छोटे से गांव से देश की राजधानी तक महिला सुरक्षित नहीं है। अंधेरा होते-होते महिला प्रगति और विकास की बातें छू-मंतर हो जाती हैं। रात में विचरण करना बेहद डरावना लगता है। कामकाजी महिलाओं को सुरक्षित घर पहुंचने की चिंता सताने लगती है। ऐसे में जरूरी है कि हम नारी

महिला समानता और सुरक्षा की बातें छू-मंतर हो जाती हैं। रात में विचरण करना बेहद डरावना लगता है। कामकाजी महिलाओं को सुरक्षित घर पहुंचने की चिंता सताने लगती है। ऐसे में जरूरी है कि हम नारी

महिला समानता और सुरक्षा की बातें छू-मंतर हो जाती हैं। रात में विचरण करना बेहद डरावना लगता है। कामकाजी महिलाओं को सुरक्षित घर पहुंचने की चिंता सताने लगती है। ऐसे में जरूरी है कि हम नारी

महिला समानता और सुरक्षा की बातें छू-मंतर हो जाती हैं। रात में विचरण करना बेहद डरावना लगता है। कामकाजी महिलाओं को सुरक्षित घर पहुंचने की चिंता सताने लगती है। ऐसे में जरूरी है कि हम नारी

महिला समानता और सुरक्षा की बातें छू-मंतर हो जाती हैं। रात में विचरण करना बेहद डरावना लगता है। कामकाजी महिलाओं को सुरक्षित घर पहुंचने की चिंता सताने लगती है। ऐसे में जरूरी है कि हम नारी

महिला समानता और सुरक्षा की बातें छू-मंतर हो जाती हैं। रात में विचरण करना बेहद डरावना लगता है। कामकाजी महिलाओं को सुरक्षित घर पहुंचने की चिंता सताने लगती है। ऐसे में जरूरी है कि हम नारी

महिला समानता और सुरक्षा की बातें छू-मंतर हो जाती हैं। रात में विचरण करना बेहद डरावना लगता है। कामकाजी महिलाओं को सुरक्षित घर पहुंचने की चिंता सताने लगती है। ऐसे में जरूरी है कि हम नारी

महिला समानता और सुरक्षा की बातें छू-मंतर हो जाती हैं। रात में विचरण करना बेहद डरावना लगता है। कामकाजी महिलाओं को सुरक्षित घर पहुंचने की चिंता सताने लगती है। ऐसे में जरूरी है कि हम नारी

महिला समानता और सुरक्षा की बातें छू-मंतर हो जाती हैं। रात में विचरण करना बेहद डरावना लगता है। कामकाजी महिलाओं को सुरक्षित घर पहुंचने की चिंता सताने लगती है। ऐसे में जरूरी है कि हम नारी

महिला समानता और सुरक्षा की बातें छू-मंतर हो जाती हैं। रात में विचरण करना बेहद डरावना लगता है। कामकाजी महिलाओं को सुरक्षित घर पहुंचने की चिंता सताने लगती है। ऐसे में जरूरी है कि हम नारी

महिला समानता और सुरक्षा की बातें छू-मंतर हो जाती हैं। रात में विचरण करना बेहद डरावना लगता है। कामकाजी महिलाओं को सुरक्षित घर पहुंचने की चिंता सताने लगती है। ऐसे में जरूरी है कि हम नारी

महिला समानता और सुरक्षा की बातें छू-मंतर हो जाती हैं। रात में विचरण करना बेहद डरावना लगता है। कामकाजी महिलाओं को सुरक्षित घर पहुंचने की चिंता सताने लगती है। ऐसे में जरूरी है कि हम नारी

महिला समानता और सुरक्षा की बातें छू-मंतर हो जाती हैं। रात में विचरण करना बेहद डरावना लगता है। कामकाजी महिलाओं को सुरक्षित घर पहुंचने की चिंता सताने लगती है। ऐसे में जरूरी है कि हम नारी

महिला समानता और सुरक्षा की बातें छू-मंतर हो जाती हैं। रात में विचरण करना बेहद डरावना लगता है। कामकाजी महिलाओं को सुरक्षित घर पहुंचने की चिंता सताने लगती है। ऐसे में जरूरी है कि हम नारी

महिला समानता और सुरक्षा की बातें छू-मंतर हो जाती हैं। रात में विचरण करना बेहद डरावना लगता है। कामकाजी महिलाओं को सुरक्षित घर पहुंचने की चिंता सताने लगती है। ऐसे में जरूरी है कि हम नारी

महिला समानता और सुरक्षा की बातें छू-मंतर हो जाती हैं। रात में विचरण करना बेहद डरावना लगता है। कामकाजी महिलाओं को सुरक्षित घर पहुंचने की चिंता सताने लगती है। ऐसे में जरूरी है कि हम नारी

महिला समानता और सुरक्षा की बातें छू-मंतर हो जाती हैं। रात में विचरण करना बेहद डरावना लगता है। कामकाजी महिलाओं को सुरक्षित घर पहुंचने की चिंता सताने लगती है। ऐसे में जरूरी है कि हम नारी

महिला समानता और सुरक्षा की बातें छू-मंतर हो जाती हैं। रात में विचरण करना बेहद डरावना लगता है। कामकाजी महिलाओं को सुरक्षित घर पहुंचने की चिंता सताने लगती है। ऐसे में जरूरी है कि हम नारी

महिला समानता और सुरक्षा की बातें छू-मंतर हो जाती हैं। रात में विचरण करना बेहद डरावना लगता है। कामकाजी महिलाओं को सुरक्षित घर पहुंचने की चिंता सताने लगती है। ऐसे में जरूरी है कि हम नारी

महिला समानता और सुरक्षा की बातें छू-मंतर हो जाती हैं। रात में विचरण करना बेहद डरावना लगता है। कामकाजी महिलाओं को सुरक्षित घर पहुंचने की चिंता सताने लगती है। ऐसे में जरूरी है कि हम नारी

महिला समानता और सु

